

[illegible]

एवं ॥ १४ ॥ अग्निकुन्तुः ॥ अग्निकुन्तुः तसि द्याया विरक्तं न देववीर्ययत्नात्
द्रुमिष्टुद्रुद्रुवासे द्वा न स्यात् ॥ १५ ॥ इन्द्रो देवशोऽविर्गमी मीषसुगमिगामी
॥ इन्द्रो देवोऽविर्गमी मीषसुगमिगामी ॥ १६ ॥ कृकृदासिः ॥ कृकृदासिः मधुजिह्वः ॥ १७ ॥
मूर्जमावदत्तयावयः ॥ १८ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ १९ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २० ॥
सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २१ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २२ ॥
सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २३ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २४ ॥
सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २५ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २६ ॥
सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २७ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २८ ॥
सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ २९ ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ सैषा नैषा ॥ ३० ॥

३
गी४॥

३

अकममामो क॥ २३॥ गायत्रेण त्वा॥ गायत्रेण त्वा कृन्दसायत्रि गृह्ण
 मिष्टेष्टेन त्वा कृन्दसायत्रि गृह्ण मिजागर्ग त्वा कृन्दसायत्रि गृह्ण
 मिष्टेष्टेन त्वा कृन्दसायत्रि गृह्ण मिजागर्ग त्वा कृन्दसायत्रि गृह्ण
 यस्वगीय॥ २॥ पुनः कृतम् ॥ विष्णुपात्रि न पिन्नुदादाय पृथिवी
 श्रीवदानम् ॥ सामेनयं अन्तमसि स्वधारि कामधीनासाः अनूदि
 अजर्क ॥ या कृणीनासा दयद्विष गोद्विषाणि २॥ पश्येष्टेन नृ॥
 पश्येष्टेन नृ॥ पश्येष्टेन नृ॥ अनूनागयानिष्टफलेन नृ॥ अनूनाग
 यः ॥ अनूनागयानिष्टफलेन नृ॥ अनूनागयानिष्टफलेन नृ॥

कुरु म्या कामि वदि नसि वदि यै ल्या कुरु म्या कामि वदि नसि मु ग्याः

स्वा कुरु म्या कामि वदि मु वृन्दे लम् ॥ १ ॥ अदि मु वृन्दे नमसि वि प्रो कु

पो म्या लो मु दस न्वा स ॥ मि स्वा सु म् न्द व श्वा कु वय गय स्वा सु मु

व नय गय स्वा हा रु गानां य गय स्वा हा ॥ २ ॥ म नी व ह्वा ॥ ग न्धे व

स्वा वि म् व सु द त्रि क म् मु वि म् व श्वा त्रि मु यज मान स्य म त्रि धि न ॥

ह्यग्नि त्रि उ ६ ॥ ३ ॥ अदि मु वृन्दे नमसि वि प्रो कु ॥ मि स्वा सु म् न्द व श्वा कु वय गय स्वा सु मु

व नय गय स्वा हा रु गानां य गय स्वा हा ॥ २ ॥ म नी व ह्वा ॥ ग न्धे व

नमः१ यत्रिधं ना न्ये वं धर्मजा विद्यया त्रिष्टु स ऊमानस्य यत्रिधि
त्रेयाग्नित्रिउ६॥ तीतिग॥ ३॥ श्रीगिरागु न्या॥ कवयुमनः८ समिधि
महि॥ अ॥ गंतवृद नम धुन॥ ४॥ समिदसि॥ समिदसि मूर्ध्ना पुनः
सा त्यागु कस्या धिदरिगस्तो॥ सविउर्वा दूक ६३५६ मुद स न्याः
मृ॥ मिखासमू नद वश ६ आत्वा वसं वा नृदा १ आदि ह्या १ स द न्द्र॥
५॥ पुनाग्रसि॥ इदू न्ना म्ना सद म्पियं गु धा म्ना प्रियं ८ सद १ आसीदः
पुनाग्रस्य पुन न्ना म्ना सद म्पियं गु धा म्ना प्रियं ८ सद १ आसीदः

॥
श्री॥

मा शुचिं धुवा ना म्ना सदं प्रियं ज धाम्ना प्रियं लं सदं आसीद प्रिं धाम्ना
 प्रियं लं सदं आसीद ॥ धुवां अमद नृ न म्ना आ नो ना विष्णु या रिया
 रि स रु म्पा रि स रु प कि म्पा रि मां य रु न्या म् ॥ ६ ॥ अ न्न वा ज जिग ॥
 अ न्न वा ज जिग वा न्या स रि श्र न्क म्वा ज जिग लं स मा र्शि ॥ न मा द
 व श्र ॥ स्व धा पि गृ श्र ॥ सु य म म रु यां रु म स्क न्न म य ॥ ७ ॥ अ रु न्न म
 य द व श्र ॥ आ य लं तं प्रिया स म र्शि ॥ विष्णु मा त्वा व क मि ष म्भ रु म
 मी म ॥ न्न न्क म्वा या म्भ य रु ष मि ष्णु म्भ न्न म सी न्क ॥ ८ ॥ वी श्व म रु म्भ

२॥ दुर्द्धाधनः शक्रः ॥ २ ॥ अरुणः वे ॥ अरुणः हर्षः मयः सवर्गः
न्या न्या वा पृथिवी श्वरः त्व न्या वा पृथिवी सिद्धः कृद्वरः ॥ ३ ॥
नुमः ॥ आर्जनः रुविषाः रु न्याः शर्मः कर्मिषाः कर्मिषाः ॥ ४ ॥ मयीदम् ॥
मयीदमिन्दः ॥ ५ ॥ निमन्धः पालः सान्नाथः मयवानः ॥ मयनामः ॥ अ
मा कर्तुं सन्नाथिषः ॥ सन्नाथः ॥ सन्नाथिषः ॥ ६ ॥ नादः पृथिवीमाभायः
माम् पृथिवीमाणाद्रयनामः ॥ ७ ॥ नागनीः ॥ ८ ॥ पद्मनाथः ॥ ९ ॥
उपद्मनाथः ॥ १० ॥ पद्मनाथः ॥ ११ ॥ पद्मनाथः ॥ १२ ॥ पद्मनाथः ॥ १३ ॥

वसन्त्यासविगुः पसवः विना ब्रह्म ॥ रुद्रा म्युष्मद् हस्तो ग्रामः ॥ यगिः
द्रा म्युष्मद् हस्तो ग्रामः ॥ ११ ॥ पुनर्कः ॥ देवसविगुः म्युष्मद् हस्तः
रुद्रा म्युष्मद् हस्तः ॥ १२ ॥ कनः म्युष्मद् हस्तः ॥ कनः म्युष्मद् हस्तः ॥ १३ ॥
मनः म्युष्मद् हस्तः ॥ मनः म्युष्मद् हस्तः ॥ मनः म्युष्मद् हस्तः ॥ १४ ॥
त्वनिः म्युष्मद् हस्तः ॥ त्वनिः म्युष्मद् हस्तः ॥ त्वनिः म्युष्मद् हस्तः ॥ १५ ॥
भाः ३ ॥ यगिः ॥ १६ ॥ पुनर्कः ॥ अरुन्तः म्युष्मद् हस्तः ॥ अरुन्तः म्युष्मद् हस्तः ॥ १७ ॥
स्वः ॥ वद्विः म्युष्मद् हस्तः ॥ वद्विः म्युष्मद् हस्तः ॥ वद्विः म्युष्मद् हस्तः ॥ १८ ॥

समुवा ॐ सम्राज्जिगुं समाधि ॥ १४ ॥ अग्नीषोमयात्रुजिनिम् ॥
अग्नीषोमयात्रुजिनिमनूऊषम्राज्जमायसवनयाहामि ॥ अ
ग्नीषोमोममयनूदगायामा नृष्टिष्ववयन्दिषावाज्ज्योनः
म्यसवनायाहामि ॥ ॐ नृदग्नीषोमयात्रुजिनिमनूऊषम्राज्जमायस
वनयाहामि ॥ ॐ नृदग्नीममयनूदगायामा नृष्टिष्ववयन्दि
षावाज्ज्योनम्यसवनायाहामि ॥ १५ ॥ वसुश्रुत्या ॥ नृदश्रुत्यादिः
शश्रुत्यासुअनाथान्वावाष्टि वीमिषावन्तरेणीत्वाष्ट्रुष्ट्रावनाम् ॥

[illegible]

क३उपचयुद्गमिवसन्तिष्ठस्यसिद्धमहन्तिष्ठस्व॥१८॥ॐः

रत्नदंष्ट्रायाः श्रीगणेशाय नमः । अथ ह्यसिद्धे प्राप्तिस्तुतः

90

८१४

महर्षिर्नमोऽस्तु विष्णवे प्रियुङ्क्तुः प्रमुखाः प्रोखाः प्रोखाः

उक्तं यत्सम्भवं यत्कथं यत्स्वांस नैव स्यात् ॥ १० ॥

वृक्षसिद्धयन्त्रवृक्षद्वयवृक्षारुवकनमश्रुवृक्ष

या १॥ यत्रो गुरु विशागुरु विष्णुगुरु मित्र ॥ मनसस्य गुरु ॥ ॐ ॥ मनस

वसुदेवस्य ह्यवर्णधाम ॥ २१ ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ कौण्डिन्यादिषाद्युः ॥
 न समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥
 शोभायुक्तं ॥ २२ ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥
 कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥ कस्तूरं ॥
 ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥ समुद्दिष्टं ॥
 विवर्णं ॥ लक्ष्मणं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥
 विवर्णं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥ विवर्णं ॥

कौआमा न्द्विषय अद्वयदिमा ननि कुविष्वक्कलं रूपे देह न
ने साकगानि हे कौआमा न्द्विषय अद्वयन्दिमा १ ए थि यान्दिः
पुत्र कलं रु गाय र्णो ज्ञ न्द साकगानि हे कौआमा न्द्विषय अ
द्वयन्दिमा मा दन्ता दशोपनिष्ठाया र्णगन्मसु १ स अ निवार
म ॥ १० ॥ स्वयम्भूतसि ॥ स्वयम्भूतसि यक्षो नम्भिर्द्विर्वा र्णसि
वर्धमानि ॥ अर्धमा दृगन्मन्वा वर्ध ॥ १० ॥ अर्धमा दृगन्मन्वा वर्ध ॥ १० ॥
गृहपतिस्त्वया लून रुद्रु दपति नारुया सह सृष्ट रुपतिस्त्वम

श्री १॥

११

याऽग्नौ गुरुर्वसिना रूपाः। अमुनिऽजो गार्हपत्यानि सक्तु गुरुः।
 हिमाः सूर्यस्या वृत्तमन्वावर्तते॥ २०॥ अग्नौ वृत्तयः॥ वृत्तमयानि
 यन्तदसं कनकं नाधीदमर्हयऽनु वास्मि सास्मि॥ २१॥ अग्नयै कः
 युवाह नाय॥ अग्नयै क युवाह नाय स्वाहा सामायः॥ २२॥ अग्नयै कः
 मरु स्वाहा॥ अपरुगाऽअसूना न कालं सिद्धिदिवर्ध॥ २३॥ अत्रूपाणि
 ॥ यगिन् अमाऽअसूनाऽसन्तः सुधया च॥ त्रिनि॥ यत्रा पत्रा नि यत्राः
 अरुत्रन्वा नि रुद्रा न्ना कात्ये जं गृह्णातु॥ २४॥ अथ पित्राऽअथ पित्राः

नामादयर्धसंश्रुतागमादृषां यधेम् ॥ अमीमदकपिक्रोसथाशुगमा

दृषाथिषत ॥ ३१ ॥ नमो वः ॥ नमो वः पिक्रोत्रात्रसायनमो वः पिक्रोत्र ॥ ३२ ॥

षायनमो वः पिक्रोत्राजीवायनमो वः पिक्रोत्र ॥ सुषायनमो वः पिक्रोत्राया

१२ श्री ॥ नायनमो वः पिक्रोत्रामन्यावः नमो वः पिक्रोत्र ॥ पिक्रोत्रानमो ॥

वोमान्नः पिक्रोत्रादकसमावः पिक्रोत्रादधोत्रद्वः पिक्रोत्रावासः आधोत्र

३३ ॥ आधोत्रपिक्रोत्रागर्हकमानम्यसंनमजम् ॥ सधुहपुनृषामम् ॥ ३३ ॥

उर्जम्बरुनी ॥ उर्जम्बरुनमृगदुर्गम्ययः कीनासम्यत्रिपूगम् ॥ स्वध

की ॥

गिनर

सुगव्ययगमपि गुरुना ॥ तज्जसनयसंदिना ज्योतिर्गोपाध्याय ॥ सु
 मिधाग्निमासमिधान् वसावयुर्गोर्ध्वयुगागिथिम ॥ आसिन्नुद्याशंक्ष
 गन ॥ १ ॥ सुसमिद्धाद्युगविधि ॥ युगनीवृशंक्षगन ॥ शुभनयजातव
 दस ॥ २ ॥ गंत्वा ॥ समिद्धिनादि प्रायुगनव द्वयामसि ॥ वृहक्षुचाय
 विष्णु ॥ ३ ॥ उयन्त्वा ॥ रत्नरुविष्णोर्गीर्णायीश्वरु रुश्वग ॥ रुषस्य
 समिधामस ॥ ४ ॥ रुर्त्तवः ॥ रुर्त्तवः रुर्त्तवः रुर्त्तवः रुर्त्तवः रुर्त्तवः
 वृत्रिम्न ॥ गस्यास्यपृथिविद्वयजनिपृथ्विर्मन्नामन्नाशया

दध ॥ ५ ॥ आर्यं नो ॥ आर्यं नो ॥ अग्निं न कमीद स दन्ना गत्रं स्युत्रं ॥

पिणत्रं श्रुयय ह्ये ॥ ६ ॥ अ न्नं अत्र नि ॥ प्रायनाम्यप्राणादयानुमी ॥

ग्रस्य न्नहि पादिवस ॥ ७ ॥ पित्रं धाम ॥ पित्रं धाम सवित्रा ऊर्गिः ॥

वाक्मं न यधीयते ॥ यमि वक्तु न रुयु रि ॥ ८ ॥ अग्नि ऊर्गि ॥ अः ॥

ग्नि ऊर्गि ऊर्गि त्रिग्नि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ऊर्गि ऊर्गि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ऊर्गि

ऊर्गि ऊर्गि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ऊर्गि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ॥ स्वाहा ॥

अग्नि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ॥ स्वाहा ॥ अग्नि ॥ स्वाहा ॥

स्युः ॥

१३
१४
१५

१३

卷二

नो वस्मिन्नाष्टुः सिन्धोः सिन्धोः ॥ इह वस्मिन्नाष्टुः ॥ २१ ॥ सुष्ठुः

रुगासि॥विष्णुर्गुरुमाविष्टः। गोपयन्॥उच्यते। नदि वदि बुधा

षावस्तुर्द्धियावयम् ॥ नमो हरे नृश्वमेसि ॥ ११ ॥ नमो नमो धृतात्म ॥

॥ ११ ॥ राजं नमस्व राजां (गु)पामृ (क)स्य (दी)दि (वि)त् ॥ दृ (ई)ना (नु) (ः) (स्व)द (म) ॥ ११ ॥

सन॥॥पुनर्वसु नवमं स्या युना रुव॥सय स्वा नः सु रुय॥२४॥

अ॒ग्नि॑ न्यसू॒ ॥ अ॒स्त॒र्वना॑ः । अ॒मन॑श्च॒ण्डा॑णि वा रु॒वा च॒ नृथ॑ ॥ वरु॑

अग्निर्वसुधावाऽश्रुक्कानक्रियुतकंसं त्रयिन्दा॥ २५ ॥ नैव्या ॥ २६

विष्णुदीदिवाः सुमायनू नमी महुसाखिख्यः॥ सनी वापि धुधीरुवने
नृणां रणायुगार्ह समस्मान् ॥ १३ ॥ ॐ तु खहि ॥ ॐ तु खे अदिगु
वहिकाया खरु ॥ मयि वृ कानु धनं र्ण र्ण ॥ १४ ॥ सामानुं स्या
नृणम् ॥ सामानुं स्या नृणं कुरुहि वृ कानु स्या ॥ कुरुहि वृ कानु स्या ॥
मिऊ ॥ १५ ॥ आ नृ नृ ॥ आ नृ नृ ॥ आ नृ नृ ॥ आ नृ नृ ॥ आ नृ नृ ॥
नृ ॥ सनृ ॥ सिषकु अमुना ॥ १६ ॥ मम ॥ मानु ॥ सा ॥ अ नृ नृ ॥ धूः
कि ॥ पु ॥ म ॥ र्ण ॥ नृ ॥ व ॥ कानु स्या ॥ १७ ॥ महि ॥ गी ॥ नृ ॥ महि

श्रीजामवास्तुशुक्रनिष्कामाश्च ॥ ११ ॥ नृदिनः
 श्रीमान्निदिनमाममाचन ॥ नाधसद्वात्रमं ॥ १२ ॥ त्रिषुनयसं ॥ १३ ॥
 १६ ॥ १२ ॥ गेहि ॥ निदिपुणामाश्चदिन ॥ यर्जिवसमर्याया ॥ अगिम्भ
 श्री १४ ॥ १३ ॥ कदाचन ॥ कदाचनसुगीतसिनन्दसद्य
 सिद्धाष्टमं ॥ उपायन्ममद्यैक्य ॥ १४ ॥ नृगमानन्दवस्यपृथग
 १५ ॥ १५ ॥ गत्सविष्ट ॥ गत्सविष्टवैत्रायम् ॥ गत्सविष्टवस्यधामनिह
 विष्णुमानन्दयश्चादयान् ॥ १६ ॥ गत्सविष्ट ॥ यत्रिगं ॥ दूतकान्तथ